BINOD BIHARI MAHTO KOYALANCHAL UNIVERSITY, DHANBAD, JHARKHAND

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद
स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र विभाग, (मानविकी संकाय) में पीएच0 डी0 उपाधि हेतु
प्रस्तुत शोध प्रारूप

वर्द्धमान महावीर और पीटर सिंगर के पर्यावरणीय चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन

शोध–निदेशक

डॉ0 अजीत कुमार वर्णवाल
सहायक प्राध्यापक
दर्शनशास्त्र विभाग
आर.एस.मोर कॉलेज, गोविन्दपुर, धनबाद

शोधार्थी

पिंकी कुमारी
दर्शनशास्त्र
बी0बी0एम0के0यू0 विश्वविद्यालय,
धनबाद।

वर्षः 2024

वर्द्धमान महावीर और पीटर सिंगर के पर्यावरणीय चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन।

1. विषय प्रवेश :

मानव जीवन का मूल स्त्रोत प्रकृति अर्थात पर्यावरण है। मानव जीवन के क्रमागत उन्नति में पर्यावरण की भूमिका अति–महत्वपूर्ण है। धरती में संतुलनमय जीवन परिचालित करने के लिए प्रकृति में सभी वस्तुओं की मात्रा एक व्यवस्थित रूप में रखी गयी है। पर्यावरण के साथ सामंजस्यपूर्ण अभिव्यक्ति से ही मानव सभ्यता तथा जगत संसार का सृजन हुआ है।

पर्यावरण अनुकूलन का परिणाम है मानव सभ्यता और संस्कृति का विकास है। भारतीय संस्कृति में दो प्रमुख रास्ते मिलकर एक हो गई हैं। एक रास्ता वैदिक पद्धति से बनी है, जबकि दूसरी रास्ता श्रमण पद्धति से बनी है। भारतीय दर्शन का एक विशिष्ट पहलू यह है कि आत्म–सुख के अलावा इनका मुख्य उद्देश्य जगत का कल्याण है। भारतीय संस्कृति का एक पहलू जो इस 'आत्मवत्सर्वभूतेषु' का स्वागत करता है, वह है जैन धर्म। यह श्रमण पद्धति में शामिल है। जैन धर्म अनादिक काल से चला आ रहा है जिसमें चौबीस तीर्थकर रहे है। प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव एवं 24वें एवं अंतिम तीर्थकर वर्द्धमान महावीर थे।

राधाकृष्णन के अनुसार, ''जैन परंपरा का दावा है कि इसका धर्म ऋषभदेव से उत्पन्न हुआ है, जो बहुत प्राचीन है। जैन संस्कृति एकांतवादी है। इसका प्राथमिक लक्ष्य मोक्ष है, जो सांसारिक कष्टों को दूर करने के बदले में शाश्वत सुख लाता है। इसलिए इसने उचित प्रायश्चित, त्याग, और पूर्ण वैराग्य पर बहुत जोर दिया है।''[1] जैन धर्म का विकास ही स्वयं के साथ–साथ जगत कल्याण के लिए हुआ। वह उसके लिए निहतिवादी परंपरा पर विश्वास करता है। वह अन्नत भावनाओं और वासनाओं का संयम एवं सन्यास ग्रहण कर मौक्ष प्राप्त करना ही जीवन का परम लक्ष्य मानता है। जैन दर्शन निर्जीव भाव के कल्याण के लिए अनेको विचार का निर्माण किया है जो जैन धर्म की पुस्तक में वर्णित है। जैन धर्म जगत के विभिन्न समस्याओं के साथ–साथ पर्यावरणीय समस्याओं पर भी विशेष रूप से गंभीर रहा है। अतः जैन धर्म पर्यावरणीय चेतना व उसके संरक्षण का सम्पूर्ण आधार प्रदान करता है।

जैन आचरण अंहिसा के मूल सिद्धांत पर आधारित है। यह आध्यात्मिक उन्नति के लिए महत्वपूर्ण होने के अलावा मनुष्य की भौतिक चिंताओं का समाधान भी प्रदान करता है। वास्तव में, अंहिसा विश्वव्यापी भाईचारे की मांग है, मैत्री का धर्म हैं, और सभी जीवित चीजों की करूणा और प्रेम का स्त्रोत है। अंहिसा मानव अस्तित्व से संबंधित कई तरह के मुद्दों को संबोधित करने में सक्षम प्रतीत होता है।

''नैतिक जीवन जीने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को पीटर सिंगर की प्रैक्टिकल एथिक्स अवश्य पढ़नी चाहिए''।[7] यह आज मानवता के सामने आने वाले कुछ सबसे महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दों को संबोधित करता हैः मनुष्यों के लिए समानता, जानवरों के लिए समानता, नैतिक शाकाहार, हत्या बनाम मरने देना, भ्रूण और स्टेम सेल अनुसंधान, गर्भपात, शिशु हत्या, इच्छामृत्यु, वैश्विक न्याय और गरीबों के प्रति कर्तव्य, ग्लोबल वार्मिंग, पर्यावरणीय नैतिकता, सविनय अवज्ञा, हिंसा और आतंकवाद। यह पाठकों को नैतिक मुद्दों के बारे में स्पष्ट रूप से सावधानीपूर्वक और फलदायी ढंग से सोचना सिखाता है। और यह एक धर्मनिरपेक्ष नैतिकता विकसित करता है, जिसका अगर सार्वभौमिक रूप से पालन किया जाए, तो दुनिया में अनावश्यक पीड़ा की मात्रा नाटकीय रूप से कम हो जाएगी।

इसमें, सिंगर का तर्क है कि समानता के मौलिक सिद्धांत को सभी संवेदनशील जीवों के लिए बढ़ाया जाना चाहिए। समानता का मूल सिद्धांत जिनके हित के लिए है, उनके संबंध में तटस्थ है। पुरुषों के हित महिलाओं के समान हितों से अधिक ध्यान देने योग्य नहीं हैं। श्वेतों के हित, अश्वेतों के समान हितों से अधिक ध्यान देने योग्य नहीं हैं। मनुष्य के हित गैर– मानवीय जानवरों के समान हितों से अधिक ध्यान देने योग्य नहीं हैं। समानता के मूल सिद्धांत के निष्पक्ष अनुप्रयोग के लिए आवश्यक है कि हम सभी को संवेदनशील बनाएं।

2. साहित्य की प्रारंभिक समीक्षा (Preliminary Review of Litrature):-

भारतीय संस्कृति में दो परम्पराएँ हैं– एक परम्परा वैदिक संस्कृति की है तथा दूसरी श्रमण संस्कृति की। जैन धर्म का संबंध मुख्यतः श्रमण संस्कृति से जुड़ा हुआ है। जैन धर्म के अनुसार जैनों की परम्परा ऋषभदेव से लेकर अन्तिम तीर्थंकर महावीर से जुड़ी हुई है। जैन दर्शन भारत का अति प्राचीन दर्शन माना जाता है। इसने मानव जीवन और संस्कृति को अत्यन्त ही प्रभावित किया है। यह अपने आप में एक स्वतंत्र धर्म हैं एवं भारतीय दार्शनिक परम्परा में इसका विशिष्ट स्थान है।

वाचस्पति गैरोला के अनुसार, "ईसा की छठी शताब्दी का काल धार्मिक दृष्टि से महान परिवर्तन अथवा क्रान्ति का काल माना जाता है। वैदिक धर्म के विरोध स्वरूप एक महान क्रान्ति का आरम्भ हुआ, जिसके नेता महावीर स्वामी तथा गौतम बुद्ध थे। इस क्रान्ति का मुख्य उद्देश्य धार्मिक विरोध करना था, किन्तु आगे चलकर इसके लक्षण साहित्य में भी स्पष्टतः दिखाई देने लगे। भारतीय षड्दर्शनों की अभ्युन्नति इसी क्रान्ति का परिणाम थी।"[2] जैन मत के संस्थापक के रूप में चौबीस तीर्थकरों की एक लम्बी परम्परा का वर्णन आता है। इस श्रृंखला के प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव को जाना जाता है।

जगत के प्राचीन ग्रन्थों में ऋग्वेद का अति महत्वपूर्ण एवं विशिष्ट स्थान है। इसकी एक ऋचा में आदि तीर्थंकर ऋषभदेव का उल्लेख मिलता है–

"ऋषभ मा समानानां समत्नानां विषासहिय् ।

हेतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिम् गदाम् ।।[3]

''यजुर्वेद और अथर्ववेद में भी ऋषभदेव का उल्लेख प्राप्त होता है''।[5]''श्रीमद्भागवतपुराण भी इस कथन का अनुमोदन करता है कि ऋषभदेव जैन दर्शन के संस्थापक थे''।[6]

जैन शब्द का अर्थ : जैन शब्द 'जिन' से बना है जिसका अर्थ है– विजेता या वह व्यक्ति जिसने अपनी समस्त इन्द्रियों तथा इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर लिया हो। वे सांसारिक संबन्धन से मुक्त पूर्ण पुरुष होते हैं। काम, क्रोधादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके भव संसार को पार करने वाले केवली जिन ही तीर्थकर कहलाते हैं। इस प्रकार जैन–धर्म–दर्शन में चौबीस तीर्थकरों की मान्यता सिद्ध है, ये सभी तपस्वी, त्यागी थे।

अहिंसा : जैन संस्कृति में व्रतों की अवधारणा अपना एक विशिष्ट स्थान रखती है जिसमें अहिंसा प्रथम महाव्रत है। अहिंसा का अर्थ है सभी प्रकार की हिंसा का पूर्ण रूप से त्याग। अपने अनुचित लाभ के लिए किसी भी जीव का, चाहे वह मनुष्य हो अथवा पशु, मन, वचन और काय से दुःख ना पहुंचाना

सत्य : असत्य का त्याग या मिथ्या वचन का त्याग जो वचन दूसरों को बुरा लगे, भय उत्पन्न करे, खेद उत्पन्न करे तथा वैर, शोक और कलह करने वाला हो– उसका पूर्ण त्याग। सत्य का आदर्श 'सुनृत' है।

'सुनृत' का अर्थ है, वह सत्य जो प्रिय एवं हितकारी हो। इसका पालन भी मन, वचन, कर्म से करना चाहिए।

अस्तेय : अस्तेय का अर्थ है– चोर प्रवृत्ति का निषेध। अर्थात बिना अनुमति द्रव्य को ग्रहण करना स्तेय कहलाता है।

ब्रह्मचर्य : ब्रह्मचर्य का अर्थ है– सभी प्रकार के वासनाओं का त्याग करना। जैनों ने केवल इन्द्रिय सुख का त्याग नहीं बल्कि सभी प्रकार की कामनाओं का परित्याग मानते हैं।

अपरिग्रह : अपरिग्रह का अर्थ है– विषयासक्ति का त्याग। इस व्रत के लिए उन सभी विषयों का त्याग करना पड़ता है जिससे इन्द्रिय सुख की उत्पत्ति होती है। आवश्यकता से अधिक वस्तुएँ एकत्रित करना परिग्रह कहलाता है। मनुष्य को परिग्रह का त्याग करना चाहिए।

पर्यावरण अध्ययन मनुष्य और प्राकृतिक दुनिया के बीच की अंतः क्रिया की समग्र रूप से जांच करता है। हमारे आस–पास के प्राकृतिक परिवेश– जमीन, हवा, पानी, पेड़ पौधे आदि को पर्यावरण कहा जाता है यहां हर उस चीज की आपूर्ति की जाती है। जिसकी जरूरत होती है और जो बच जाती है उसे प्रकृति द्वारा भावी पीड़ियों के लिए संरक्षित किया जाता है। अथर्ववेद के अनुसार ''हे धरती माता, मैं तुमसे जो कुछ भी लूंगा, वह केवल वही होगा जिसे तुम फिर से पैदा कर सकोगी।'' मैं कभी भी तुम्हारी जीवन शक्ति या महत्वपूर्ण क्षेत्र पर प्रहार नहीं करूंगा।''[4]

पर्यावरण को सात भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. सामाजिक पर्यावरण
2. सांस्कृतिक पर्यावरण
3. प्राकृतिक पर्यावरण
4. सौन्दर्यात्मक पर्यावरण
5. आर्थिक पर्यावरण
6. मनोवैज्ञानिक पर्यावरण
7. शैक्षणिक पर्यावरण

प्रदूषण के प्रकारः–

निम्नलिखित में पर्यावरण पदूषण के 4 भाग होते है।

1. जल प्रदूषण

2. वायु प्रदूषण

3. मिट्टी प्रदूषण

4. ध्वनि प्रदूषण

एक इंसान स्वस्थ और उचित तरीके से कैसे विकास कर सकता है? उसे किस तरह से जीना चाहिए? इन सवालों के जवाब के रूप में मानवीय मूल्यों का विकास किया गया है। मानव जीवन का परीक्षण किया जा रहा है। इन मानकों का उपयोग जीवन को अच्छे या बुरे के रूप में वर्गीकृत करने के लिए किया जाता है। इस प्रकार हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि, आंतरिक और बाहरी दोनों के प्रकाश

में कुछ जीवन मूल्यों को मानव के स्वस्थ और उचित विकास के लिए मानकों या मानदंडों के रूप में मान्यता दी गई है। इन्ही मानदंडों या कसौटियों को हम मानव मूल्य कहते है। मानव के जीवन मे मूल्यों का महत्व बहुत अधिक है। मनुष्य के जीवन का प्रत्येक कार्य किसी न किसी मूल्य से सम्बंधित होता है। मूल्यों के कारण ही मनुष्य को विकास की दिशा प्राप्त होती है।

वर्द्धमान महावीर के विचार ने मानव मूल्य एवं पर्यावरण

मानव मूल्यों की दृष्टि से जैन धर्म–दर्शन एक अति समृद्ध दर्शन है। जिसके अनुसार शिक्षा केवल ज्ञानार्जन ही नहीं अपितु व्यक्ति के जीवन के गहन रूप से सम्बन्धित कठोर अनुशासन है। जैन दर्शन में यह स्पष्ट किया गया है कि वास्तविक ज्ञान केवल वही है जो व्यक्ति को सजीवन की ओर अभिप्रेरित करता है। ज्ञान चाहे धार्मिक हो अथवा सांसारिक या व्यावसायिक, यदि वह व्यक्ति या समाज के लिए हितकारी है तो ही उसे शिक्षा का अंग माना जाएगा, अन्यथा नहीं।

वर्द्धमान महावीर की विशिष्टता है कि उन्होंने विचार पक्ष को जितना पुष्ट किया है उतना ही आचार पक्ष को भी लेकर चलते है। जैन धर्म के चार मूल सिद्धांत हैं। आचरण में अंहिसा, ज्ञान में स्यादवाद, समाज एवं संप्रदाय में अपरिग्रह और मन में अनेकांतवाद। इस दृष्टि से पर्यावरण संतुलन पर चर्चा करना जैन आचरण को और भी प्रासंगिक बनाता है।

हमारे अस्तित्व का मूल स्त्रोत हमारा पर्यावरण है। मनुष्य चारों ओर से इस घेरे से घिरा हुआ है। चुँकि मनुष्य इसी घेरे में पलता बढ़ता है, इसलिए यह मनुष्य के विकास में गहरा प्रभाव डालता है। मनुष्य इस जगत में सबसे उन्नत संवेदनशील प्राणी। मनुष्य ने आदिकाल से ही अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप अपने परिवेश में हेरफेर करने का प्रयास किया है। पर्यावरण संबंधी सोच के लिए उसकी दृष्टि भी इसी दौरान विकसित हुई है।

पर्यावरणीय विचारक सिंगर की योग्यता है कि नवीनता की कमी और प्रारूप की अंतर्निहित सीमाओं के बावजूद, उनकी पुस्तक को पढ़ना एक सार्थक प्रयास है। सिंगर एक स्पष्ट और आकर्षक लेखन शैली के साथ एक उत्तेजक, जानकार और व्यावहारिक दार्शनिक हैं। यह संग्रह उन विषयों का व्यापक और सुलभ अवलोकन प्रदान करता है जो सिंगर की नैतिकता के केंद्र में हैं। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए दिलचस्प होगा जो अभी तक उनके काम से परिचित नहीं हैं, लेकिन व्यावहारिक नैतिकता और सामाजिक नीति में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को यह पसंद आ सकता है।

सिंगर के उपयोगितावाद का महानगरीय चरित्र।

सिंगर का निबंध संग्रह सार्वजनिक दर्शन की परंपरा से संबंधित है– यानी, सार्वजनिक, गैर–शैक्षणिक क्षेत्रो में दर्शन की परंपरा। जिन विषयों को वह संबोधित करते हैं और जिन शब्दों में वह उन्हें प्रस्तुत करते हैं, वे आम दर्शकों को आकर्षित करने के लिए होते हैं।

सिंगर के दृष्टिकोण के बारे में दूसरा अवलोकन संख्याओं, आंकड़ों और तथ्य के मामलों के साथ उनके व्यापक जुड़ाव से संबंधित है। हमारा अधिकांश नैतिक व्यवहार अनिश्चितता की स्थिति में होता है, और किसी भी मुद्दे के नैतिक महत्व को तौलना एक कठिन कार्य हो सकता है; हालाँकि, संख्याएँ अक्सर हमें नैतिक वजन का एक मोटा संकेत प्रदान करती हैं, जैसा कि सिंगर सुझाव देते हैं। "मैं बिल्कुल गलत होने की बजाय थोड़ा–बहुत सही होना पसंद करूंगा।

सिंगर का तर्क है, "हमें वास्तविक दुनिया के लिए नीतियां बनानी चाहिए, न कि आदर्श दुनिया के लिए''। वास्तविक दुनिया में तथ्य मायने रखते हैं और संख्याएँ मायने रखती हैं। ऐसा सिंगर का

मानना है कि मनोवैज्ञानिक रूप से, हम गुमनाम भीड़ के बजाय एक विशिष्ट व्यक्ति की मदद करने के लिए अधिक आसानी से प्रेरित होते हैं। हालाँकि, भीड़ की मदद करना अधिक नैतिक महत्व रखता है।

3. समस्या का विधान(Statement of the problem):-

वर्तमान में पर्यावरण में केवल अव्यवस्था देखने को मिल रही है। आज अकादमिक जगत द्वारा पर्यावरणीय अवस्था को नकारा नहीं जा सकता एवं अनदेखा नहीं किया जा सकता है। पर्यावरण समस्या हमारे चारों ओर प्रबल होती जा रही है, इस प्रबलता का संघर्ष ना केवल भारत कर रहा है बल्कि सम्पूर्ण विश्व कर रहा है। यूरोप जैसे देश में वहाँ के चिन्तक संवेदशील होते है और पर्यावरण समस्या के लिए संघर्ष कर रहे है। पर्यावरण समस्या सार्वभौमिक हो रही है जिसे टाला नहीं जा सकता है आज इसी कारण पर्यावरण चिन्तन के साथ–साथ भारतीय चिन्तनों का भी कर्त्तय हो गया है। जो जीवन मूल्य पर आधारित है। पर्यावरण संबंधित यह विचार पीटर सिंगर के द्वारा भी दिया गया है जो पर्यावरण हित के लिए अति उपयोगी है। पर्यावरण समस्या का समधान देखने से ही जैन धर्म दर्शन और पीटर सिंगर के चिन्तन एवं पर्यावरण के प्रति आचरण का विशेष योगदान उभर कर सामने आता है।

4. समस्या का अनुसंधान (Problem of Investigation):-

वर्तमान में मानव समाज के लिए अगर कोई बड़ा संकट है तो वह पर्यावरण से संबंधी का ही संकट है। आज सारी समस्याओं को अनदेखा करते हुए अगर किसी समस्या का समाधान करना है तब वह है पर्यावरणीय समस्या। हम मानव प्रकृति के द्वारा निर्मित एक सुंदर प्रतिबिम्ब है। इसी प्रकार हमारे चारों ओर पर्यावरणीय प्रकृति का ही सुन्दरकृति है। अतः आवश्यकता है, कि इस जगत को बनाए रखने के लिए मानव समाज के साथ पर्यावरण का भी देखभाल हो। मैं दर्शनशास्त्र की शोध छात्रा होने के कारण इस विषय पर रूचि रखते हुए एवम् चिन्तित होते हुए इस विषय पर अध्ययन करने का निर्णय लिया है। प्रस्तुत शोध प्रारूप पर्यावरण समस्या को दृष्टिगत रखते हुए ही तैयार किया गया है।

5. शोध का उद्देश्य (Objective of the Research):-

वर्तमान समय में पर्यावरणीय अव्यवस्था के कारण सम्पूर्ण जगत पर्यावरणीक समस्या से घिर गया है। आज चारों ओर प्रदूषण इतना बढ़ गया है कि लोगों को इनके कारण कई समस्याओं का समना करना पड़ रहा है। आज मानव स्वार्थसिद्धि के लिए ना केवल पर्यावरण का अहित कर रहा है बल्कि मानव समाज के साथ सम्पूर्ण जगत के अहित में लगा हुआ है, प्रकृति के साथ छेड़–छाड़ करने से कई प्रकार की प्राकृतिक आपदा होने लगी है। इन सभी समस्याओं का समाधान क्या हो आज सम्पूर्ण मानव जगत चिन्तित है। इस शोध का उद्देश्य भी यही है कि महावीर जैन एवं पीटर सिंगर के पर्यावरण संबंधी विचार को उजागर करते हुए लोगों को प्रेरित करें ताकि हम प्रदूषण मुक्त वातावरण से पर्यावरण को पूर्ण स्वच्छ बना सके, व्यवस्थित कर सके जिससे हमे कभी किसी पर्यावरण संकट का समना ना करना पड़े।

6. परिकल्पना(Hypothesis):-

उपरोक्त बिंदु पर प्रकाश डालते हुए कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न दिए गए है जो निम्नलिखित है।

- ❖ क्या पर्यावरणीय समस्या का समाधान किया जा सकता है?

- ❖ क्या वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण को रोका जा सकता है?
- ❖ कैसे सम्भव है कि बढ़ते हुए जल प्रदूषण को रोका जाए?
- ❖ वर्तमान में ध्वनि प्रदूषण को किस प्रकार कम किया जा सकता है?
- ❖ पीटर सिंगर के पर्यावरणीय विचार धारा से मानव समाज को किस प्रकार प्रेरणा मिलेगी?
- ❖ महावीर जैन का पर्यावरण विचार मानव के लिए किस प्रकार उपयोगी हो सकता है?
- ❖ क्या पर्यावरणीय चिन्तन से चिन्ता मुक्त हुआ जा सकता है?

उपरोक्त प्रश्नों का उत्तर इस शोध के माध्यम से देने का पूर्ण प्रयास किया जाएगा।

संकलित साक्ष्यों को आधार मान कर पर्यावरणीय समस्या का समाधान करने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही पीटर सिंगर एवम् महावीर जैन के पर्यावरणीय संबंधी विचारधाराओं का अध्ययन किया जाएगा।

वर्तमान में हो रहे पर्यावरण संकट का समाधान पर्यावरण को स्वच्छ रखने के प्रयास से किया जाएगा।

7. शोध प्रारूप एवं अध्ययन पद्धति : (Research Methodology):-

यह शोध कार्य जैन दर्शन और पीटर सिंगर की महत्वपूर्ण मूल ग्रंथ एवं महत्वपूर्ण सहायक ग्रंथों पर आधारित होगा। इसके लिए पुस्तकावलोकन की विधि की सहायता ली जाएगी। यह शोध मुख्यतः नवीन शोध होगा। इस शोध में शोध के व्यवहारिक पहलुओं का भी प्रयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक और समीक्षात्मक पद्धति का भी उपयोग किया जाएगा।

8. तथ्य संकलन(Collection of Data and Analysis) :-

तथ्य संकलन हेतु विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण किया जाएगा और पुस्तकालयों में उपलब्ध जैन शास्त्र से संबंधित ग्रंथों का अध्ययन कर नैतिक विचारों से संबंधित तथ्य सामग्रियों को एकत्रित किया जाएगा। शोध के क्रम में इस विषय पर जानकारी रखने वाले गुरु वर और विद्वानों से संवाद किया जाएगा। इस शोध के क्रम में विषय से संबंधित प्रमुख चिंतक एवं विचारकों की प्रकाशित रचनाएं, शोध–प्रबंध आदि की सहायता ली जाएगी। इसके अलावा भिन्न–भिन्न जैन मठों में जाकर तथ्य संग्रह किया जाएगा।

9. शोध कार्य का महत्व(Significance of proposed work):-

आज के समय में मानव अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए अन्य का हित के बारे में सोचना तक भूल गया है। आज स्थिति ऐसी बनी हुई है कि मानव द्वारा स्वार्थसिद्धि के क्रम में कभी जल प्रदूषण हो रहा है, तो कभी ध्वनि प्रदूषण हो रहा है, तो कभी वायु प्रदूषण हो रहा है, तो कभी मृदा प्रदूषण हो रहा है। एसे में हम सभी अशुद्ध एवं प्रदूषित वातावरण में जीवन यापन करने के कारण रोग ग्रस्त होते चले जा रहे है तथा कई रोगों के शिकार हो रहे है। इन समस्याओं का समाधान हेतु पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित बनाना हमारा प्रथम कर्तव्य है। इन कर्तव्यों को पूरा करने के लिए पीटर सिंगर और महावीर जैन के पर्यावरणीय विचार को अध्ययन करना आवश्यक है। अतः प्राचीन भारतीय परंपरा में प्रकृति संरक्षण से संबंधित विचारों को फिर से महत्व प्रदान करते हुए उसे वर्तमान में लागू करना शोध कार्य का महत्व है।

10. वर्तमान ज्ञान में योगदान (Contribution to the existing Knowledge):-

वर्तमान में लोगों द्वारा केवल स्वार्थ हित में कर्म किए जा रहे है। आज इसी के कारण पर्यावरण संकट में है। जिसके कारण सम्पूर्ण जगत संकट में है। इनका समाधान कैसे हो इसके लिए आवश्यक हैं कि महान दार्शनिको के पर्यावरण संबंधी विचारों का अध्ययन करें। पिटर सिंगर एवं महावीर जैन भी महान दार्शनिक है, जिनका पर्यावरणीय विचारधाराओं का अध्ययन करेंगे। इससे पर्यावरण को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित करने में सहायता प्राप्त हो सकती है। वर्तमान में यह महत्वपूर्ण है कि पर्यावरण समस्या का हर सम्भव समाधान किया जाए एवं इस समस्या को अन्य समस्या से महत्वपूर्ण एवं बड़ा समस्या समझा जाए।

11. अनुसंधान की सीमाएं(Research Limitation):-

इस शोध का आधार सैद्धान्तिक तो होगा ही, साथ ही व्यवहारिक एवं दिशा युक्त भी होगा। अब तक लिखे गए ग्रंथों को आधार मानते हुए शोध कार्य को निश्चित रूप से सीमाबद्ध करते हुए पूर्ण किया जाएगा। पर्यावरणीय समस्या विचार को केन्द्र में रखते हुए शोध कार्य किया जाएगा।

कृषकों से विनम्र निवेदन करते हुए। रसायनिक खाद का उपयोग ना करने का सुझाव दिया जाएगा जिससे उनके सकात्मक विचार को ध्यान में रखते हुए शोध कार्य किया जाएगा।

पर्यारवण संबंधी समस्याओं के कारणों को ढूढा जाएगा ताकि उसके आधार पर शोध कार्य को पूरा किया जा सके।

पीटर सिंगर एवं महावीर जैन के विचारों को उसके वास्तविक रूप में रखने का प्रयास किया जाएगा जिससे शोध कार्य पूरा हो सके।

12. भविष्य में कार्य होने की संभावना (Future work):-

पर्यावरण की समस्या आज वैश्विक समस्या बन गयी है, इससे पूरा जगत दुष्प्रभावित हो रहा है, यहाँ तक की आज असाभविक प्राकृतिक घटनाएँ घट रही हैं और यह बढ़ती ही जा रही है, इससे पूरा जीव जगत दुष्प्रभावित हो रहा है। अतः इसके समाधान के लिए आने वाले समय में अनंत संभावना में है।

13. संभावित अध्यायीकरण (Tentative Chapterigation) :-

अध्ययन की सुविधा के लिए शोध कार्य के विषय को निम्नलिखित संभावित अध्याय में विभक्त किया गया है:–

- भूमिका
- प्रथम अध्याय : वर्द्धमान महावीर एवं पीटर सिंगर का जीवन परिचय
- द्वितीय अध्यायः भारतीय दर्शन में पर्यावरणीय चिन्तन
- तृतीय अध्याय : वर्द्धमान महावीर के दर्शन में पर्यावरणीय चिन्तन
- चतुर्थ अध्याय : पीटर सिंगर के विचार में पर्यावरणीय चिंतन
- पंचम अध्याय : वर्द्धमान महावीर एवं पीटर सिंगर के पर्यावरणीय चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन
- उपसंहार

भूमिका

वर्तमान स्थिति में पर्यावरण से संबंधित चिंतन समस्याओं के बारे में आलोचना की जाएगी। इसके अर्न्तगत पर्यावरणीय सम्बंधी विचार को समझाने का प्रयास किया जाएगा साथ ही पर्यावरण से जुड़ी हर समस्या का विचार किया जायेगा। वर्तमान में पर्यावरणीय प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो ना केवल मानव समाज का अहित कर रहा है बल्कि सम्पूर्ण जगत के पशु–पक्षियों का भी अहित कर रहा है। यह हम प्रयास करेगे कि पर्यावरण प्रदूषण के आधार को सर्वप्रथम समझेंगे तथा पर्यावरण प्रदूषण के प्रकारों को समझने का प्रयास किया जाएगा। मानव को इस ओर समझने को प्रेरित किया जायेगा कि पर्यावरण संकट मानव जीवन का सबसे बड़ा संकट है। अतः पर्यावरण समस्या को समझाने तथा उसके समाधान हेतु चिंतनशील होते हुए कार्य करें, यह हम प्रयास करेंगे की प्रकृति से जुड़ी हर सम्पदा को जाने ताकि उसका हम संरक्षण कर सकें जिससे अंततः पर्यावरण प्रदूषण सीमाबद्ध हो, जिसके फलस्वरूप पर्यावरण स्वच्छ एवं सुव्यवथित हो सकें।

❖ प्रथम अध्याय : वर्द्धमान महावीर एवं पीटर सिंगर का जीवन परिचय

प्रथम अध्याय में महावीर का परिचय दिया जाएगा। जैन दर्शन के अनुसार भगवान महावीर चौबीसवें और अंतिम जैन तीर्थकर थे। उनका जन्म 599 ईषा पूर्ववैशाली सम्राज्य के क्षत्रियकुंड में हुआ था जो आधुनिक बिहार में है। उनके पिता का नाम राजा सिद्धार्थ और माता का नाम रानी त्रिशला था।तीर्थकर एक प्रबुद्ध आत्मा है जो मनुष्य के रूप में जन्म लेता है और गहन ध्यान के माध्यम से पूर्णता प्राप्त करता है। एक जैन के लिए भगवान महावीर भगवान से कम नहीं है और उनका दर्शन बाइबिल के समान है। वर्धमान महावीर एक साधारण मनुष्य के रूप में जन्म लिये, उन्हे बाद में भगवान महावीर के नाम से जाना जाने लगा। 30 वर्ष की आयु में वर्धमान ने आध्यात्मिक जागृति की खोज में अपना घर छोड़ दिया और अगले साढे बारह वर्षों तक उन्होने कठोर ध्यान और तपस्या की, जिसके बाद वे सर्वज्ञ बन गये। केवल ज्ञान प्राप्त करने के बाद, उन्होने अगले तीस वर्षों तक जैन दर्शन सिखने के लिए पूरे भारतीय उपमहाद्वीप की यात्रा की।

पीटर सिंगर का जीवन परिचय। पीटर अल्बर्ट डेविड सिंगर का जन्म 6 जुलाई 1946 को ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न शहर में हुआ था, सिंगर के माता–पिता ऑस्ट्रेलियाई यहूदी थे जो 1938 में नाजी जर्मनी द्वारा ऑस्ट्रिया के कब्जे के बाद वियना से ऑस्ट्रेलिया आ गए थे। वे मेलबर्न में बस गए। सिंगर एक नास्तिक है और उसका पालन–पोषण एक समृद्ध, गैर–धार्मिक परिवार में हुआ था। उनके पिता का चाय और कॉफी आयात करने का एक सफल व्यवसाय थे, उनका परिवार शायद ही कभी यहूदी छुट्टियाँ मनाता था। स्कूल छोड़ने के बाद, सिंगर ने मेलबर्न विश्वविद्यालय के ऑरमंड कॉलेज के निवासी के रूप में कानून, इतिहास और दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया और 1967 में स्नातक की डिग्री हासिल की। उन्होने बताया कि उनकी रूचि बढ़ने के बाद उन्होने दर्शनशास्त्र में प्रमुखता के लिए चुना। वह ऑस्ट्रेलियाई नैतिक दार्शनिक और प्रिंसटन विशविद्यालय में बायोएथिक्स के प्रोफेसर है। वे व्यवहारिक नैतिक में माहिर है, इस विषय को धर्मनिरपेक्ष, उपयोगितावादी दृष्टिकोण से देखते है। उन्होने एनिमल लिबरेशन (1975) पुस्तक लिखी, जिसमें उन्होने शाकाहार के लिए तर्क दिया। उन्होने निबंध ''अकाल, समृद्धि और नैतिकता'' लिखा जो वैश्विक गरीबो की मदद के लिए दान करने का समर्थन करता है। अपने अधिकांश करियर के लिए, वह एक प्राथमिकता उपयोगितावादी थे, लेकिन उन्होने द पॉइंट ऑफ व्यू ऑफ द यूनिवर्स (2014) में खुलासा किया, जो कटारजीना डी लजारी–राडेक के साथ सह–लेखक थे, कि वह एक सुखवादी उपयोगितावादी बन गए थे।

❖ **द्वितीय अध्याय : भारतीय दर्शन में पर्यावरणीय चिंतन**

द्वितीय अध्याय है भारतीय दर्शन में पर्यावरणीय चिन्तन। इस अध्याय के अंतर्गत भारतीय दर्शन में पर्यावरणीय चिन्तन को रखा गया है। यह प्रयास किया जायेगा कि भारतीय चिन्तकों द्वारा पर्यावरण के विषय में क्या विचार दिया गया है। उसे उजागर करने के लिए यहां की संस्कृति अथवा भारतीय संस्कृति एवं वैदिक संस्कृति में विद्यमान पर्यावरणीय चिन्तन पर विचार किया जाएगा। हमारे दार्शनिक ग्रन्थों में पर्यावरणीय चिन्तन भरा पड़ा है। मार्कण्डेय पुराण, अग्निपुराण, कर्मपुराण ब्रह्मणपुराण, वायुपुराण, वाराहपुराण, विष्णुपुराण में विद्यमान पर्यावरणीय चिन्तन की आलोचना की जाएगी। जैन धर्म एवं दर्शन में भी पर्यावरणीय चिन्तन भरा पड़ा है। इस अध्याय के अंतर्गत भारतीय दर्शन में निहित पर्यावरण से संबंधित विचारों की व्याख्या की जाएगी। साथ ही जैन दर्शन के पर्यावरणीय विचार पर अधिक प्रकाश डाला जायेगा।

❖ **तृतीय अध्याय : वर्द्धमान महावीर के दर्शन पर्यावरणीय चिन्तन**

तृतीय अध्याय है वर्धमान महावीर के दर्शन में पर्यावरणीय चिन्तन। पर्यावरण प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग के दौर में भगवान महावीर की प्रासंगिकता बढ़ गई है। भगवान महावीर को पर्यावरण पुरुष भी कहा जाता है। अहिंसा विज्ञान को पर्यावरण का विज्ञान भी कहा जाता है।

भगवान महावीर मानते थे कि जीव और अजीव की सृष्टि में जो अजीव तत्व है अर्थात पंचतत्व का मिश्रण है। उन सभी में भी जीव है अतः इनके अस्तित्व को अस्वीकार मत करो। इनके अस्तित्व को अस्वीकार करने का मतलब है अपने अस्तित्व को अस्वीकार करना। स्थावर या जंगम, दृश्य और अदृश्य सभी जीवों का अस्तित्व स्वीकारने वाला ही पर्यावरण और मानव जाति की रक्षा के बारे में सोच सकता है।

जीव हत्या पाप है: जैन धर्म का नारा है 'जियो और जिने दो'। जीव हत्या को जैन धर्म में पाप माना गया है। मानव की करतूत के चलते आज हजारों प्राणियों की जाति–प्रजातियाँ लुप्त हो गई हैं। सिंह पर भी संकट गहराता जा रहा है। यदि मानव धर्म के नाम पर या अन्य किसी कारण के चलते जीवों की हत्या करता रहेगा तो एक दिन मानव ही बचेगा और वह भी आखिरकार कब तक बचा रह सकता है।

वृक्ष से मिलती शांति और स्वास्थ्यः जैन धर्म में चैत्य वृक्षों या वनस्थली की परंपरा रही है। चेतना जागरण में पीपल, अशोक, बरगद आदि वृक्षों का विशेष योगदान रहता है। यह वृक्ष भरपूर ऑक्सीजन देकर व्यक्ति की चेतना को जाग्रत बनाए रखते में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। इसीलिए इस तरह के सभी वृक्षों के आस–पास चबूतरा बनाकर उन्हें सुरक्षित कर दिया जाता था ताकि वहाँ व्यक्ति बैठकर ही शांति का अनुभव कर सकता है।

❖ **चतुर्थ अध्याय : पीटर सिंगर का पर्यावरणीय चिन्तन**

इस अध्याय में पीटर सिंगर का पर्यावरणीय चिन्तन के बारे में विचार किया जाएगा। सिंगर ने कहा है कि नैतिकता के लिए हमें अक्सर दूसरों के हितों के लिए अपने हितों का त्याग करना पड़ता है। नैतिक जीवन जीने में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति को पीटर सिंगर की प्रैक्टिकल एथिक्स अवश्य पढ़नी चाहिए। यह आज मानवता के सामने आने वाले कुछ सबसे महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दों को संबोधित करता है।

❖ पंचम अध्याय : वर्द्धमान महावीर एवं पीटर सिंगर के पर्यावरणीय चिन्तन कातुलनात्मक अध्ययन

इस अध्याय में वर्द्धमान महावीर एवं पीटर सिंगर के पर्यावरणीय चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन किया जाएगा। प्रकृति के द्वारा निर्मित मानव एक सुन्दर रचना है। यहां हम महावीर के दर्शन में पर्यावरण से संबंधित जो विचारधाराये हैं उसके सार को रखते हुए पीटर सिंगर के पर्यावरणीय विचार से तुलना करने का प्रयास करेगें। साथ ही इन दोनों के पर्यावरणीय विचार में क्या समानता एवं क्या भिन्नता हैं। यह भी जानने का प्रयास करेंगे। अततः इनके विचारों से प्रेरित होते हुए पर्यावरण हित में कार्य करने के लिए लोगों को प्रेरित किया जायेगा।

❖ उपसंहार

पर्यावरण से संबंधित विचार हमारे बीच आज कोई नया विचार नहीं हैं, बल्कि पर्यावरणीय विचारधारा हमारे भारतीय परम्परा में पहले से ही निहित है। साथ ही पाश्चात्य परम्परा में भी डेक्र्ट, प्लोटो जैसे महान दर्शनिकों के दर्शन में पर्यावरणीय चिंतन विधामन है, महावीर जैन एवं पीटर सिंगर के पर्यावरण संबंधी विचार को जानने के पश्चात हमारा कार्य केवल पर्यावरण के हित में ही होगा। अर्थात हम हर संभव पर्यावरणीय सम्पदा की रक्षा करें जिससे पर्यावरण से संबंधित किसी प्रकार की कोई समस्या ना हो। हमारा लक्ष्य है कि इस शोध के माध्यम से पर्यावरण की रक्षा हो, लोग पर्यावरण के प्रति जागरूक हों तथा पर्यावरण हित के लिए कार्य करें।

संदर्भ सूची (Reference)

1. डॉ0 राधाकृष्णन, *भारतीय दर्शन,* प्रकाशन– राजपाल एण्ड संस, 1989 भाग एक, पृ0 287
2. गैरोला, वाचस्पति, *भारतीय दर्शन,* लोक भारती, प्रथम संस्करण, पृ0 95
3. ऋग्वेद : प्रकाशन– गीता, प्रेष गोरखपुर, पृष्ठ 10/66/1, 102/6
4. डॉ0 राधाकृष्णन, *भारतीय दर्शन,* प्रकाशन– राजपाल एण्ड संस, 1989, भाग एक, पृ0 233
5. *श्रीमद्भागवत पुराण,* स्कन्द, प्रकाशन– गीता, प्रेष, गोरखपुर, 5/4/6
6. नेमिचंद्र शास्त्री, तीर्थकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा, प्रेष वाराणसी, पृ0 9
7. पीटर सिंगर, प्रेक्टिकल एथिक्स, ऑस्ट्रेलिया, 2011, पृ0 सं0– 156

सन्दर्भ–ग्रंथ सूची (Bibliography)

यहाँ उन ग्रन्थों की सूची दी जा रही है जो प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत के रूप में लिए गए हैं। ये निम्न हैं–

1. आचारांग सूत्रः सम्पादक श्री सागरचन्द सूरिश्वर, मोतीलाल बनारसीदास इण्डोलॉजिकल ट्रस्ट, दिल्ली, 1978.
2. आचारांग भाष्यः आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं, 1924
3. आदिपुराण (महापुराणं भाग 1–2): आचार्य जिनसेन, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी, 1941
4. उपासकाध्ययनः पं० कैलाशचन्द्र सिद्धांतशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, वाराणसी, 1964
5. ऋषभदेव एक परिशीलनः देवेन्द्र मुनि शास्त्री, सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा, 1967
6. कल्पसूत्रः देवेन्द्र मुनि शास्त्री, श्री तारक गुरु जैन ग्रंथमाला, शास्त्री सर्कल, उदयपुर, राजस्थान, 1985
7. जैन साहित्य का वृहद इतिहास (भाग–2): डॉ० मोहन लाल मेहता व प्रो० हीरालाल कपाड़िया, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, करौंदी, वाराणसी, 1991
8. तत्वार्थसूत्रः पं० सुखलाल संघवी, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी, 1976
9. तत्वार्थवार्तिक (भाग–2): भट्ट अकलंकदेव अयोध्याप्रसाद गोयलीय मंत्री भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी, 1944
10. तीर्थंकर महावीर और उनके दशधर्मः प्रो० भागचन्द्र जैन, भास्तकर, पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी, 1999
11. दशवैकालिक सूत्रः आत्माराम जी महाराज, ज्वालाप्रसाद माणिक चन्द्र जौहरी, महेन्द्रगढ़, पटियाला
12. धर्माकृत (अनगार) : पं० आशाधर, भारतीय ज्ञानपीठ, प० कैलाशचन्द्र शास्त्री, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली, 1977
13. धर्माकृत (सागर): पं० आशाधर भारतीय, ज्ञानपीठ, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली, 1944
14. निशीथ सूत्रः अमोलक ऋषि जैन शास्त्राद्धार मुद्रणालय, सिकंदराबाद
15. नियमसारः कुन्दकुन्द, दिग० जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, जयपुर, 1984
16. पुरुषार्थसिद्धि उपायः आचार्य अमृतचन्द्र रावजी भाई छगनभाई देसाई मा० व्यवस्थापक परमश्रूत प्रीज्ञावक मंडल, श्रमद् राजचन्द्र जैनशास्त्रमाला, श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास, प्रो० बोरिया, प्याहा आणंद, गुजरात, 1966
17. प्रश्नव्याकरण सूत्रः सम्पा० मधुकर मुनि, श्री आगम प्रकान समिति, जैन स्थानक पीपलिया बाजार, व्यावर (राजस्थान), 1983
18. स्थानांगसूत्रः पं० हीरालाल शास्त्री, भुवाचार्य मधुकर मुनि श्री आगम प्रकाशन समिति, व्यावर,राजस्थान, 1981